(1) Lecture No.-03

Name of the college - A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
L.N.M.U. Darbhanga.

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T.)

Deptt - A.I.H.&C

Lession / Plan - B.A Part II (H) A.I.H.&C Paper IV

Date - 30-06-2021

Name of the Topic - (बोधगया मंदिर)

बोधगया :— पाँचवी सदी के सदियों में बोधगया के मंदिर की भी गणना होती है। बौद्ध साहित्य में इसे महाबोधि विहार भी कहा गया है। भारत के मंदिरों में बोधगया एक आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक धार्मिक इमारत है। इसकी स्थापत्य कला अनोखी तथा विलक्षण है। यद्यपि गुप्त युग में शिखर का आरंभ हुआ था, किन्तु उसकी अपनी विशेषता है। इसी स्थान पर गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ, जिससे इसका बोधगया नामकरण हुआ। अशोक ने आठवें शिलालेख में महाबोधि की धर्मयात्रा (तीर्थयात्रा) का उल्लेख किया है।

"सो देवानं पियो पियदसि राजा दसवा भिसितो संतो अयाम संबोधि। तेनें सा धर्मयात्रा।"

परन्तु महाबोधि के मंदिर -निर्माण का विवरण नहीं मिलता। इसे किस शासक या व्यक्ति ने निर्मित किया, यह विवादास्पद है। इस मंदिर की विशेषता के कारण नेपाल में महाबोधि का मंदिर बनाया गया तथा इसी कारण बर्मा के पेगन स्थान पर किया गया। भगवान के ज्ञान प्राप्ति का स्थल होने से बौद्ध लोगों का ध्यान सदा बोधगया पर था।

यह विहार मंदिर समतल भूमि पर बना है, जिसका निचला भाग वर्गाकार है। ऊपर की ओर शीर्ष क्रमशः पतला होता चला गया है।

P.T.O.

सबसे ऊपर सभी आकार एक स्थान मिल गए हैं, जो नुकीला न होकर चिपटा वर्तमान मंदिर के आकार से प्राचीनतम, स्व का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। पाटलीपुत्र की खुदाई से एक मुहर मिलती है। जिसमें बोधगया मंदिर की प्रतिकृति है। आज का मंदिर 50 फीट चौड़े चबूतरे पर खड़ा है, जिसकी ऊँचाई करीब 20 फीट है। इस विशाल पिरामिड के आकार का गुंबज खींच जाता है। उसकी ऊँचाई 180 फीट है। चारों कोने के मध्य शिखर का लघु रूप तैयार किया गया और उस कारण ब्राह्मण धर्म का यह पंचायत मंदिर बन जाता है। प्राचीन मंदिर के कोनों पर स्थित आकार का अभाव है। इस मंदिर पर मंदिर का शिखर ऊँचा है। इस मंदिर के पश्चिम बोधिवृक्ष तथा वज्रासन दिखलायी पड़ता है। ये आकार-प्रकार वेदिका से घिरे हैं। पार्श्व के विहार था, स्तूप नष्ट हो गए। गुप्तकाल में वैष्णव मत के प्रचार से जनता का ध्यान बौद्ध-विहारों से हटता गया तथा लोग विमुख होते गए। उस युग की निर्मित ईंट के विशाल आकार (इमारतें) भिन्न हो गई हैं। उनकी उपयोगिता जाती रही। राजा तथा प्रजा उदासीन हो गए। पाँचवीं व छठी शताब्दियों में गंगा घाटी के तथा सिंध के भू-भाग में भी ईंटे अतीत की रहीं। यद्यपि उस भाग की इमारतें बनती रहीं, पश्चिम में मोहनजोदड़ो की परम्परा सभी का क्रम चलता रहा। विशाल इमारतों का स्तूप का निर्माण उस भाग में चबूतरे पर

तथा पार्श्व में विहार की स्थिति विशेष उल्लेखनीय है। मीरपुर तथा अलेकारण गंगा घाटी के नमूनों से मिलते-जुलते है। दोनों भू-भाग की इमारतों में ईंट को सुंदर रीति से खोदकर अलंकृत किया गया है। ईंट को अलंकारिक रीति से खोदने के कार्य में सर्वत्र एकरूपता है। पक्की मिट्टी के फलक (प्लेट) के आधार पर उनकी ईंट की इमारतें पाँचवी या छठी शती की ज्ञात होती है।

बोधगया के मंदिर के गर्भगृह में बुद्ध की विशाल प्रतिमा भूमि-स्पर्श मुद्रा में आसीन है। मंदिर का मुख्य प्रवेशद्वार पूर्वी दिशा में है। सूर्य की किरणों से ही प्रकाश पहुँच पाता है, अन्यथा उसमें खिड़की का अभाव है। मंदिर के द्वार के समीप सीढ़ियाँ बनी है, जिनसे होकर पहली मंजिल पर पहुँचते है। वहाँ पर्याप्त क्षेत्रफल में खुला स्थान है। उसी भाग के चारों कोनों में चार गुंबज है। इस प्रकार की मंदिर-निर्माण की योजना उस शताब्दी के अन्य मंदिरों में दृष्टिगोचर नहीं होती। इस कारण बोधगया मंदिर की विलक्षण कला है, जिसकी निर्माण रीति महाबोधि मंदिर में ही सीमित है।

भारती कुमारी
A.T._H.E._L.C
Date-30-06-2021